अध्याय 14

आर्थिक अवधारणाएं एवं नियोजन

14.1 राष्ट्रीय आय का सामान्य परिचय

हम दिन–प्रतिदिन के जीवन में अनेक बार आय शब्द का प्रयोग करते हैं। किसी भी व्यक्ति या परिवार के कल्याण को देखने हेतु सर्वाधिक उपयोगी कारक 'आय' को माना जाता है। हम सब यह जानते हैं कि आय कल्याण का एकमात्र निर्धारक नहीं है किन्तु इसे व्यक्ति के कल्याण के अनेक निर्धारकों में से एक प्रभावशाली कारक अवश्य ही माना जाता है। एक व्यक्ति या परिवार की आय बड़ी सीमा तक उसके भौतिक जीवन, सामाजिक प्रस्थिति तथा आर्थिक प्रगति की व्याख्या कर देती है। व्यक्ति या परिवार की भांति ही एक राष्ट्र की आय भी ज्ञात की जा सकती है। राष्ट्रीय आय की गणना एक अर्थव्यवस्था के लिए निम्नांकित दृष्टि से महत्त्वपूर्ण होती है।

(अ) राष्ट्रीय आय से राष्ट्र की आर्थिक स्थिति तथा आर्थिक प्रगति का ज्ञान होता है।

(आ) राष्ट्रीय आय के आधार पर हम विभिन्न राष्ट्रों की अर्थव्यवस्थाओं की तुलना कर सकते हैं।

(इ) इससे अर्थव्यवस्था में विभिन्न क्षेत्रों के योगदान एवं उनके सापेक्षिक महत्त्व की जानकारी मिलती है।

(ई) राष्ट्रीय आय के अनुमानों के आधार पर अर्थव्यवस्था के लिए भावी नीतियों का निर्माण किया जा सकता है।

14.1.1 राष्ट्रीय आय

राष्ट्रीय आय एक अर्थव्यवस्था की आर्थिक निष्पादकता का मौद्रिक माप है । इसे देश के उत्पादन के सभी साधनों द्वारा एक निश्चित अवधि (एक वित्त वर्ष) के दौरान उत्पादित समस्त अन्तिम वस्तुओं और सेवाओं के मौद्रिक मूल्य के रूप में परिभाषित किया जाता है। ध्यान रहे कि राष्ट्रीय आय में देश की अन्तिम वस्तुओं और सेवाओं के मूल्य को ही शामिल किया जाता है। अन्तिम वस्तु या सेवा वह वस्तु होती है, जिसका उत्पादन प्रक्रिया में पुनः प्रसंस्करण नहीं किया जाता है। साथ ही यह भी महत्त्वपूर्ण है कि राष्ट्रीय आय देश के उत्पादन के सभी साधनों की आय का योग होती है न कि देश के व्यक्तियों की आय का।

> वित्त वर्ष – भारत में वित्त वर्ष 1 अप्रेल से 31 मार्च तक होता है।
> उत्पादन – उपयोगिता का सृजन तथा मूल्य वृद्धि का सृजन ही उत्पादन होता है।

देश के सभी साधन अपने संयुक्त प्रयास द्वारा जितने मूल्य की अन्तिम वस्तुयें तथा सेवायें उत्पादित करते हैं देश में उतने ही मूल्य की मूल्य वृद्धि का निर्माण होता है। इस मूल्य वृद्धि को सभी साधनों के स्वामियों को वितरित किया जाता है। साधनों को उनकी सेवाओं का पुरस्कार दिया जाता है। भूमि को लगान, श्रम को मजदूरी, पूँजी को ब्याज तथा उद्यमी को लाभ प्राप्त होता है। राष्ट्र के उत्पादन के साधनों को प्राप्त होने वाला भुगतान उस राष्ट्र के सभी साधनों द्वारा की गयी मूल्य वृद्धि (उत्पादन) के समान होता है। इस प्रकार साधनों द्वारा जो उत्पादन किया जाता है वही उत्पादन के साधनों को आय के रूप में प्राप्त होता है। अतः एक राष्ट्र के लिए सकल राष्ट्रीय उत्पाद तथा सकल राष्ट्रीय आय समान होती है। सरल शब्दों में कहा जा सकता है कि एक देश के उत्पादन के सभी साधनों द्वारा एक वित्त वर्ष में उत्पादन प्रक्रिया में योगदान के फलस्वरूप प्राप्त आय का योग राष्ट्रीय आय कहलाती है। राष्ट्रीय आय को घरेलू साधन आय तथा विदेशों से प्राप्त शुद्ध साधन आय के योग के रूप में भी बताया जा सकता है।

घरेलू साधन आय का तात्पर्य देश की घरेलू सीमाओं के अन्दर उत्पन्न होने वाली साधन आय से है।

राष्ट्रीय आय के अनेक रूप होते हैं, जिन्हें राष्ट्रीय आय अवधारणाएँ कहा जाता है। इन सभी अवधारणाओं के विशिष्ट वैज्ञानिक नाम, अर्थ एवं उपयोगिताएं हैं। इनमें सकल घरेलू उत्पाद, शुद्ध घरेलू उत्पाद, सकल राष्ट्रीय उत्पाद, शुद्ध राष्ट्रीय उत्पाद आदि प्रमुख हैं। एक–दूसरे से पृथक होते हुए भी ये सभी अवधारणाएँ एक अर्थव्यवस्था की आय को ही प्रदर्शित करती हैं। एक अर्थव्यवस्था की निष्पादकता को मापने हेतु प्रायः सकल घरेलू उत्पाद को अधिक उपयोग में लिया जाता है। एक वित्त वर्ष के दौरान देश की घरेलू सीमाओं में उत्पादित समस्त अन्तिम वस्तुओं और सेवाओं के मौद्रिक मूल्यों का योग सकल घरेलू उत्पाद कहलाता है।

14.1.2 प्रति व्यक्ति आय

राष्ट्रीय आय आर्थिक कल्याण का एक उपयुक्त माप नहीं है। यह जनसंख्या में परिवर्तन के प्रभाव को समायोजित नहीं करता है। जनसंख्या में परिवर्तन के प्रभाव को गणना में शामिल करने से

प्रति व्यक्ति आय, राष्ट्रीय आय की तुलना में आर्थिक कल्याण एवं आर्थिक विकास का अधिक उपयुक्त माप बन जाता है। प्रति व्यक्ति आय ज्ञात करने हेतु देश की राष्ट्रीय आय को उस देश की जनसंख्या से विभाजित किया जाता है–

$$\text{प्रति व्यक्ति आय} = \frac{\text{राष्ट्रीय आय}}{\text{जनसंख्या}}$$

14.1.3 भारत में राष्ट्रीय आय की गणना

स्वतन्त्रता से पूर्व भारत में राष्ट्रीय आय की गणना हेतु कोई सरकारी संस्था नहीं थी। भारत में राष्ट्रीय आय की प्रथम गणना श्री दादा भाई नौरोजी द्वारा 1868 ई. में की गयी थी। इनके पश्चात् फिण्डले शिराज, डॉ0 वी0 के0 आर0 वी0 राव, आर0 सी0 देसाई इत्यादि के द्वारा भी राष्ट्रीय आय के अनुमान लगाये गये। इन सभी विद्वानों ने राष्ट्रीय आय की गणना हेतु अलग–अलग विधियों और आधारों का प्रयोग किया। परन्तु इन विद्वानों के पास विश्वसनीय समंकों एवं सूचनाओं का अभाव था तथा इन्होंने उपयुक्त सांख्यिकीय विधियों का भी उपयोग नहीं किया।

स्वतंत्रता के पश्चात् भारत सरकार द्वारा श्री पी0 सी0 महालनोबिस की अध्यक्षता में अगस्त 1949 में राष्ट्रीय आय समिति का गठन किया गया। इस समिति ने अपनी प्रथम रिपोर्ट 1951 ई. में तथा अन्तिम रिपोर्ट 1955 ई. में प्रस्तुत की । इसके द्वारा राष्ट्रीय आय की गणना का कार्य केन्द्रीय सांख्यिकी संगठन (Central Statistical Organisation-CSO) को सौंप दिया गया, जो वर्ष 1955 से प्रतिवर्ष CSO भारत में राष्ट्रीय आय की गणना का कार्य कर रहा है।

14.2 अर्थव्यवस्था के क्षेत्र

आप लोगों को विभिन्न आर्थिक गतिविधियों में कार्यरत पाएँगे। इनमें से कुछ गतिविधियाँ वस्तुओं का उत्पादन करती हैं एवं कुछ सेवाओं का सृजन करती हैं। ये गतिविधियाँ हमारे चारों ओर हर समय सम्पादित होती हैं। हम इन गतिविधियों को कैसे समझ सकते हैं ? इन्हें समझने का एक तरीका यह है कि कुछ महत्त्वपूर्ण मानदंडों के आधार पर इन्हें विभिन्न समूहों में वर्गीकृत कर दिया जाए। इन समूहों को अर्थव्यवस्था के क्षेत्र भी कहते हैं।

14.2.1 अर्थव्यवस्था के तीन क्षेत्र

प्राथमिक क्षेत्र में उन गतिविधियों को सम्मिलित किया जाता है, जिनमें प्राकृतिक संसाधनों को प्रत्यक्ष रूप से उपयोग में लेकर उत्पादन किया जाता हैं। प्राकृतिक संसाधनों के प्रत्यक्ष उपयोग पर आधारित अनेक गतिविधियाँ हैं, जैसे–कपास की खेती। यह एक मौसमी फसल है। कपास के पौधों की वृद्धि के लिए हम मुख्यतः प्राकृतिक कारकों जैसे–वर्षा, सूर्य का प्रकाश और जलवायु पर निर्भर है। अतः कपास एक प्राकृतिक उत्पाद है। इसी प्रकार डेयरी, खनन इत्यादि में भी प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग करके किसी वस्तु का उत्पादन करते हैं इसलिए इन्हें भी प्राथमिक क्षेत्र की गतिविधि कहा जाता हैं। प्राथमिक क्षेत्र को कृषि एवं सहायक क्षेत्र भी कहा जाता है।

द्वितीयक क्षेत्र की गतिविधियों के अन्तर्गत उत्पादों को विनिर्माण प्रणाली द्वारा अन्य रूपों में परिवर्तित किया जाता है। यह प्राथमिक क्षेत्र के बाद का अगला कदम है। यहाँ वस्तुएँ निर्मित की जाती हैं। यह प्रक्रिया किसी कारखाना, किसी कार्यशाला या घर में हो सकती है। जैसे कपास के पौधे से प्राप्त रेशे का उपयोग कर हम सूत कातते हैं और कपड़ा बुनते हैं, गन्ने को कच्चे माल के रूप में उपयोग कर हम चीनी और गुड़ तैयार करते हैं, मिट्टी से हम ईंटें बनाते हैं और ईंटों से घर और भवनों का निर्माण करते हैं। चूँकि यह क्षेत्र क्रमशः संवर्धित विभिन्न प्रकार के उद्योगों से जुड़ा हुआ है, इसलिए इसे औद्योगिक क्षेत्र भी कहा जाता है।

प्राथमिक और द्वितीयक क्षेत्र के अतिरिक्त आर्थिक गतिविधियों की एक तीसरी कोटि भी है, जो तृतीयक क्षेत्र के अन्तर्गत आती है और उपर्युक्त दो क्षेत्रों से भिन्न है। ये गतिविधियाँ प्राथमिक और द्वितीयक क्षेत्र के विकास में सहयोग करती हैं। ये स्वतः वस्तुओं का उत्पादन नहीं करती हैं बल्कि उत्पादन प्रक्रिया में सहयोग करती हैं। जैसे प्राथमिक और द्वितीयक क्षेत्र द्वारा उत्पादित वस्तुओं को थोक एवं खुदरा विक्रेताओं को बेचने के लिए ट्रकों और रेलगाड़ियों द्वारा परिवहन की आवश्यकता पड़ती है। कभी–कभी वस्तुओं का गोदामों में भंडारण करने की आवश्यकता होती है। हमें उत्पादन और व्यापार में सहूलियत के लिए टेलीफोन पर वार्तालाप करने, पत्राचार (संवाद) करने या बैंकों से कर्ज लेने की भी आवश्यकता होती है। परिवहन, भण्डारण, संचार, बैंक सेवाएं और व्यापार तृतीयक क्षेत्र की गतिविधियों के कुछ उदाहरण हैं। चूँकि ये गतिविधियाँ वस्तुओं के बजाय सेवाओं का सृजन करती हैं, इसलिए तृतीयक क्षेत्र को सेवा क्षेत्र भी कहा जाता है।

सेवा क्षेत्र में कुछ ऐसी अपरिहार्य सेवाएँ भी हैं, जो प्रत्यक्ष रूप से वस्तुओं के उत्पादन में सहायता नहीं करती हैं। इनमें शिक्षक, चिकित्सक, धोबी, नाई, मोची एवं वकील प्रशासनिक एवं लेखा कार्य करने वालों की सेवाएं सम्मिलित होती है। वर्तमान समय में सूचना–प्रौद्योगिकी पर आधारित कुछ नवीन सेवाएँ इंटरनेट कैफे, ए. टी. एम. बूथ, ई–कियोस्क, कॉल सेन्टर, सॉफ्टवेयर कम्पनी इत्यादि की सेवाएं भी महत्त्वपूर्ण हो गई हैं।

14.2.2 क्षेत्रों में ऐतिहासिक परिवर्तन

सामान्यतया अधिकांश विकसित देशों में यह पाया गया है

कि विकास की प्रारम्भिक अवस्था में प्राथमिक क्षेत्र ही सबसे महत्त्वपूर्ण क्षेत्र रहा है। धीरे–धीरे कृषि प्रणाली परिवर्तित होती गई और यह क्षेत्र समृद्ध होता गया व पहले की तुलना में अपेक्षाकृत अधिक उत्पादन होने लगा। अनेक लोग दूसरे कार्य करने लगे। शिल्पियों और व्यापारियों की संख्या में वृद्धि होने लगी। क्रय–विक्रय की गतिविधियाँ कई गुना बढ़ गईं। इसके अतिरिक्त अनेक लोग परिवहन, प्रशासन और सैनिक कार्य इत्यादि से भी जुड़ते गये। फिर भी इस अवस्था में अधिकांश वस्तुएँ प्राथमिक क्षेत्र से उत्पादित होती थीं, अधिकतर लोग इसी क्षेत्र में रोजगार प्राप्त करते थे।

विनिर्माण की नवीन प्रणाली के प्रचलन से कारखाने अस्तित्व में आए और उनका प्रसार होने लगा। जो लोग पहले खेतों में काम करते थे, उनमें से बहुत से लोग कारखानों में काम करने लगे। कारखानों में सस्ती दरों पर उत्पादित वस्तुओं का उपयोग होने के कारण कुल उत्पादन एवं रोजगार की दृष्टि से द्वितीयक क्षेत्र सबसे महत्त्वपूर्ण हो गया। इसके फलस्वरूप अतिरिक्त समय में भी काम होने लगा। विगत 100 वर्षों में, विकसित देशों में द्वितीयक क्षेत्र से तृतीयक क्षेत्र की ओर बदलाव हुआ है। कुल उत्पादन की दृष्टि से सेवा–क्षेत्र का महत्त्व बढ़ गया। अधिकांश श्रमजीवी लोग सेवा–क्षेत्र में नियोजित हैं। विकसित देशों में यही स्थिति देखते को मिलती है।

14.2.3 उत्पादन में तृतीयक क्षेत्र का बढ़ता महत्त्व

पिछले वर्षों में अर्थव्यवस्था के सभी क्षेत्रों में उत्पादन में वृद्धि हुई है परन्तु सबसे अधिक वृद्धि तृतीयक क्षेत्र के उत्पादन में हुई है। परिणामतः भारत में प्राथमिक क्षेत्र को प्रतिष्ठापित करते हुए, तृतीयक क्षेत्र सबसे बड़े उत्पादक क्षेत्र के रूप में उभरा। भारत में यद्यपि सकल घरेलू उत्पाद में तीनों क्षेत्रों की हिस्सेदारी में परिवर्तन हुआ है, फिर भी रोजगार में उल्लेखनीय परिवर्तन नहीं हुआ है। प्राथमिक क्षेत्र से रोजगार का स्थानान्तरण क्यों नहीं हुआ ? इसका कारण यह कि द्वितीयक और तृतीयक क्षेत्र में रोजगार के अवसरों का पर्याप्त सृजन नहीं हुआ। परिणामतः देश में लगभग आधे श्रमिक प्राथमिक क्षेत्र, मुख्यतः कृषि–क्षेत्र में काम कर रहे है, जिसका सकल घरेलू उत्पाद में योगदान 15 प्रतिशत से भी कम है। इसकी तुलना में द्वितीयक और तृतीयक क्षेत्र का सकल घरेलू उत्पाद में हिस्सा 85 प्रतिशत से अधिक है। ये क्षेत्र लगभग आधे लोगों को रोजगार प्रदान करते हैं।

14.3 आर्थिक वृद्धि एवं आर्थिक विकास

जिन देशों की आय अधिक है, उन्हें कम आय वाले देशों से अधिक विकसित समझा जाता है। अधिक आय का अर्थ मानवीय आवश्यकताओं की संतुष्टि हेतु अधिक वस्तुओं का उपलब्ध होना है। चूँकि विभिन्न राष्ट्रों की जनसंख्या अलग–अलग होती है, अतः राष्ट्रों के बीच तुलना करने के लिये कुल आय इतना उपयुक्त माप नहीं है। कुल आय की तुलना करने से हमें यह ज्ञात नहीं होता है कि औसत व्यक्ति क्या कमा रहा है, इसीलिए राष्ट्रीय आय की तुलना में औसत या प्रति व्यक्ति आय को अधिक महत्त्व प्रदान किया जाता है। समय के साथ–साथ राष्ट्रीय आय तथा प्रति व्यक्ति आय में होने वाली वृद्धि को आर्थिक वृद्धि के रूप में परिभाषित किया जाता है। राष्ट्रीय आय तथा प्रति व्यक्ति आय एक देश के विकास स्तर तथा कल्याण को मापने एवं देखने की दृष्टि से अति उपयोगी है, लेकिन यह देश के विकास के स्तर तथा कल्याण का पर्याप्त माप नहीं है।

जब हम व्यक्तिगत आकांक्षाओं और लक्ष्यों को देखते हैं तो पाते हैं कि लोग केवल बेहतर आय ही नहीं चाहते, अपितु वे अपनी सुरक्षा, दूसरों से आदर और समानता का व्यवहार, स्वतन्त्रता इत्यादि भी पाना चाहते हैं। इस प्रकार राष्ट्र के कल्याण के लिए केवल आय ही महत्त्वपूर्ण नहीं है। विकसित सामाजिक संरचना एवं अच्छे पर्यावरण को सिर्फ पैसे से प्राप्त नहीं किया जा सकता है। लम्बे समय तक यही माना जाता रहा कि जब एक देश की आय में वृद्धि होगी तो वहाँ के लोग ज्यादा सुखी होंगे। धीरे–धीरे यह अनुभव होने लगा कि देश की आय अधिक होने पर भी वहां के लोगों के जीवन की गुणवत्ता निम्न रह सकती है।

यह माना जाने लगा है कि केवल आर्थिक वृद्धि ही ध्येय नहीं है वरन् आर्थिक वृद्धि के साथ–साथ मनुष्यों के सामाजिक, राजनैतिक एवं जीवन के अन्य सभी आयामों में भी सुधार होना चाहिए। आर्थिक वृद्धि के साथ–साथ लोगों के जीवन की गुणवत्ता के अन्य आयामों में सकारात्मक परिवर्तन की प्रक्रिया को आर्थिक विकास कहा जाता है।

14.3.1 आर्थिक वृद्धि

समय के साथ–साथ राष्ट्र के वास्तविक उत्पादन या आय के स्तर में वृद्धि होना ही आर्थिक वृद्धि कहलाती है। सरल शब्दों में आर्थिक वृद्धि, बढ़ती हुई राष्ट्रीय आय तथा प्रति व्यक्ति आय को सूचित करती है। यह अर्थव्यवस्था के आकार में परिवर्तन का प्रत्यक्ष माप है। आम तौर पर इसे कल्याण के एक मापक के रूप में देखा जाता है। राष्ट्र के प्राकृतिक, भौतिक, मानवीय एवं पूँजीगत संसाधनों की मात्रा तथा गुणवत्ता में वृद्धि कर इनके कुशल उपयोग द्वारा उत्पादन या आय के उच्च स्तर को प्राप्त करने की प्रक्रिया ही आर्थिक वृद्धि कहलाती है। आर्थिक वृद्धि एक दीर्घकालीन मात्रात्मक प्रक्रिया है।

आर्थिक वृद्धि के गुणात्मक आयाम नहीं होते हैं। यह मूल्यविहीन अवधारणा है। आर्थिक वृद्धि में सामाजिक, राजनैतिक,

संस्थागत इत्यादि स्थितियों में होने वाले परिवर्तनों पर कोई विचार नहीं किया जाता हैं।

14.3.2 आर्थिक विकास

आर्थिक विकास, आर्थिक वृद्धि की तुलना में व्यापक अवधारणा है। यह वह प्रक्रिया है, जिसमें एक अर्थव्यवस्था में वास्तविक राष्ट्रीय आय तथा प्रति व्यक्ति आय बढ़ती है और इसके साथ–साथ सामाजिक दृष्टिकोण, सांस्कृतिक स्वरूप, संस्थागत ढांचे, उत्पादन की तकनीक तथा अर्थव्यवस्था की संरचना में भी अनुकूल परिवर्तन होते हैं। आर्थिक विकास की प्रक्रिया राष्ट्र के आर्थिक, सामाजिक एवं राजनैतिक कल्याण को सुनिश्चित करती है। आर्थिक विकास की प्रक्रिया के गुणात्मक आयाम भी होते हैं। इन गुणात्मक आयामों को वास्तविक राष्ट्रीय आय या प्रति व्यक्ति आय में होने वाली वृद्धि से अभिव्यक्त नहीं किया जा सकता। आर्थिक वृद्धि तथा अनुकूल सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं संस्थागत परिवर्तनों का योग आर्थिक विकास कहलाता है। चूँकि आर्थिक विकास का एक महत्त्वपूर्ण आयाम आर्थिक वृद्धि है, अतः कहा जा सकता है कि बिना वृद्धि के विकास नहीं हो सकता है। किसी भी राष्ट्र के विकास के स्तर तथा कल्याण के मापक के रूप में आर्थिक विकास को आर्थिक वृद्धि की तुलना में अधिक उपयुक्त माना जाता है।

सामाजिक विज्ञान के विकास के क्रम में जब यह स्वीकार किया गया कि राष्ट्रीय आय तथा प्रति व्यक्ति आय का स्तर, विकास या कल्याण को मापने का अपर्याप्त मापदण्ड हैं तो आर्थिक विकास के साथ–साथ विकास की कुछ अन्य अवधारणाएँ यथा–सतत विकास, समावेशी विकास, मानव विकास आदि भी अत्यधिक लोकप्रिय हुई।

सतत विकास या धारणीय विकास या पोषणीय विकास –

सतत विकास वह है, जो भावी पीढियों की आवश्यकताओं को संतुष्ट करने की क्षमता से समझौता किये बिना वर्तमान की आवश्यकताओं को पूरा करता है। यह वह आर्थिक विकास है जो प्राकृतिक संसाधनों को हानि पहुँचाये बिना किया जाता है। कहा जा सकता है कि प्राकृतिक संसाधनों की निरंतरता को बनाये रखते हुए जो आर्थिक विकास किया जाता है वह सतत विकास कहलाता है।

समावेशी विकास –

समावेशी विकास यह सुनिश्चित करता है कि विकास के लाभ समाज के सभी वर्गों तक पहुँचने चाहिये। अनेक लोग लिंग, भाषा, क्षेत्र के भेदभाव, गरीबी तथा शारीरिक असमर्थता के कारण आर्थिक विकास के लाभों से वंचित रह जाते हैं। समावेशी विकास समाज के वंचित वर्गों को विकास की मुख्य धारा में शामिल करने पर बल देता है। यह एक व्यापक अवधारणा है जो आय की समानता के साथ–साथ अवसर की समानता तथा जीवन के सभी आयामों में समान मानवीय अधिकारों का समर्थन करती है।

मानव विकास –

मानव विकास की अवधारणा 1990 ई. में मानव विकास सूचकांक की रचना के साथ मुखर हुई। महबूब उल हक के नेतृत्व में संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम द्वारा तीन व्यापक आयामों यथा ज्ञान, स्वास्थ्य (जीवन–प्रत्याशा) तथा जीवन–स्तर (प्रति व्यक्ति आय) को शामिल करते हुऐ मानव विकास के स्तर को मापने के लिए एक सूचकांक तैयार किया गया। यह सूचकांक इसलिए तैयार किया गया था कि विकास–परिणामों का मूल्यांकन करने की अंतिम कसौटी मनुष्य के लिए विकल्पों का विस्तार होना चाहिए। इस प्रकिया में आर्थिक वृद्धि एक साधन है, साध्य नहीं। इस सूचकांक ने विकास के मुद्दे को अर्थ–केन्द्रित से मनुष्य–केन्द्रित बना दिया। यह राष्ट्रों के कल्याण और विकास के स्तर को मापने तथा विभिन्न राष्ट्रों के बीच तुलना करने हेतु एक प्रभावी सूचकांक है।

14.4 भारत में नियोजन

हम समय, धन आदि संसाधनों का प्रयोग इस प्रकार करना चाहते हैं कि अधिकतम कार्यों को उन संसाधनों के उपयोग द्वारा सही ढ़ंग से सम्पन्न किया जा सके। किसी भी घरेलू कार्यक्रम को सम्पन्न करने के लिए सर्वप्रथम उसकी रूपरेखा तैयार की जाती है। इसके पश्चात् व्यक्ति या परिवार अपने संसाधनों को इस प्रकार से उपयोग में लेने का प्रयत्न करता हैं कि वह श्रेष्ठ ढंग से जी सके।

व्यक्ति या परिवार की भांति ही एक राष्ट्र भी अपने संसाधनों का अनुकूलतम उपयोग करके अनेक लक्ष्यों को पूरा करना चाहता है। नियोजन वह तकनीक है जिसमें उपलब्ध संसाधनों का प्राथमिकता क्रम में निर्धारित विभिन्न लक्ष्यों में अनुकूलतम आवंटन एवं उपयोग करके उन्हें प्राप्त करने का प्रयत्न किया जाता है। नियोजन के कुछ महत्त्वपूर्ण घटक होते हैं। प्रथम, इसमें प्राथमिकता क्रम में निर्धारित सुपरिभाषित लक्ष्य एवं उद्देश्य होते हैं। द्वितीय, उपलब्ध संसाधनों का अनुमान लगाया जाता है। तृतीय, अनुमान लगाकर उन संसाधनों का विभिन्न लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु अनुकूलतम आवंटन तथा उपयोग किया जाता है। यद्यपि आर्थिक नियोजन की अनेक परिभाषाएँ हैं लेकिन सरल शब्दों में कहा जा सकता है कि उपलब्ध आर्थिक संसाधनों के उपयोग से, निर्धारित सामाजिक लक्ष्यों को प्राप्त करने का विज्ञान ही आर्थिक नियोजन है। आर्थिक नियोजन की प्रक्रिया में महत्त्वपूर्ण निर्णय केन्द्रीय प्राधिकार द्वारा लिए जाते हैं। अर्थव्यवस्था की गति, दिशा, प्रबंधन एवं निर्धारण केन्द्रीय प्राधिकार के द्वारा तय होता है।

नियोजन संसाधनों का उपयोग करके लक्ष्यों को प्राप्त करने की तकनीक है। इस तकनीक का उपयोग एक राष्ट्र अनेक क्षेत्रों में निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए कर सकता है, जैसे परिवार–नियोजन, वित्तीय नियोजन आदि। जब नियोजन की तकनीक का उपयोग अर्थव्यवस्था के विकास या वांछित आर्थिक लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु किया जाता है तो वह आर्थिक नियोजन कहलाता है।

राष्ट्रीय स्तर पर आर्थिक नियोजन की तकनीक सर्वप्रथम सोवियत संघ द्वारा अपनायी गई थी। सोवियत संघ ने 1928 ई. में केन्द्रीय नियोजन की घोषणा की तथा पंचवर्षीय योजनाओं के माध्यम से आर्थिक विकास का मार्ग अपनाया तथा इसकी प्रथम पंचवर्षीय योजना अपने आप में एक क्रांति सिद्ध हुई। स्वंतत्रता के पश्चात् भारत भी तीव्र आर्थिक विकास के लिए राष्ट्रीय स्तर पर आर्थिक नियोजन के मॉडल को अपनाने वाले राष्ट्रों की सूची में शामिल हो गया।

आर्थिक नियोजन के विचार ने भारतीय विद्वानों तथा बुद्धिजीवियों को अत्यधिक प्रभावित किया। 1930 ई. से 1940 ई. के दशक में भारत के विभिन्न विद्वानों ने नियोजन हेतु अनेक प्रस्ताव रखे तथा इसके द्वारा विकास का मार्ग अपनाने का समर्थन किया। भारतीय आर्थिक नियोजन के इतिहास में प्रथम प्रयास 1934 ई. में सर एम. विश्वेश्वरैया द्वारा किया गया। इन्होंने अपनी पुस्तक ''प्लान्ड इकॉनॉमी ऑफ इंडिया'' (Planned Economy of India) में भारत के नियोजित विकास के लिए एक कार्यक्रम प्रस्तुत किया।

स्वतंत्रता के पश्चात् पंचवर्षीय योजनाओं के निर्माण हेतु भारत सरकार ने एक संकल्प द्वारा मार्च 1950 में योजना आयोग की स्थापना की। इसका मुख्य कार्य देश के संसाधनों का आकलन कर उन्हें बढ़ाना तथा संसाधनों को प्रभावी एवं संतुलित उपयोग के लिए योजनाएं बनाना था। योजनाओं में विभिन्न उद्देश्यों एवं लक्ष्यों की प्राथमिकताओं का निर्धारण कर संसाधन आवंटन का प्रस्ताव रखना भी योजना आयोग का महत्त्वपूर्ण कार्य था।

योजना आयोग एक संविधानेत्तर तथा सलाहकारी संस्था थी। अगस्त 1952 में भारत सरकार ने एक संकल्प के द्वारा राष्ट्रीय विकास परिषद् की स्थापना की। इसकी स्थापना का मुख्य ध्येय भारत के राज्यों व केन्द्र शासित प्रदेशों को योजना निर्माण एवं क्रियान्वयन में शामिल करना तथा नियोजन की प्रक्रिया का विकेन्द्रीकरण करना था। राष्ट्रीय विकास परिषद् योजना आयोग द्वारा तैयार की गई योजनाओं का अनुमोदन करती है तथा समय–समय पर योजनाओं की प्रगति की समीक्षा करती है। राज्यों के मुख्यमंत्री तथा केन्द्र शासित प्रदेशों के प्रशासक अथवा उपराज्यपाल भी इसके सदस्य होते हैं। यह भी एक संविधानेत्तर तथा सलाहकारी संस्था है। योजना आयोग राष्ट्रीय विकास परिषद् के व्यापक मार्गदर्शन के अन्तर्गत कार्य करता है।

14.4.1 भारत में आर्थिक नियोजन के उद्देश्य

भारत में नियोजन को देश के रूपान्तरण के एक महत्त्वपूर्ण उपकरण के रूप में अपनाया गया। स्वतंत्रता से पूर्व भारत के भविष्य के सम्बंध में देखे गये सपनों को साकार करने के लिए नियोजन का मार्ग अपनाया गया। प्रत्येक पंचवर्षीय योजना में अनेक महत्त्वाकांक्षी उद्देश्यों एवं लक्ष्यों का निर्धारण करके उन्हें प्राप्त करने हेतु प्रयत्न किया गया। सार रूप में भारत में नियोजन के प्रमुख उद्देश्य हैं–

1. आर्थिक विकास के लक्ष्य को प्राप्त करना।
2. गरीबी की समस्या का समाधान करना।
3. आय की असमानताओं को कम करना। गरीबी तथा आय की

क्र.सं.	पंचवर्षीय योजना	निर्धारित अवधि
1	पहली पंचवर्षीय योजना	1 अप्रैल 1951 से 31 मार्च 1956 तक
2	दूसरी पंचवर्षीय योजना	1 अप्रैल 1956 से 31 मार्च 1961 तक
3	तीसरी पंचवर्षीय योजना	1 अप्रैल 1961 से 31 मार्च 1966 तक
4	चौथी पंचवर्षीय योजना	1 अप्रैल 1969 से 31 मार्च 1974 तक
5	पांचवी पंचवर्षीय योजना	1 अप्रैल 1974 से 31 मार्च 1979 तक
6	छठी पंचवर्षीय योजना	1 अप्रैल 1980 से 31 मार्च 1985 तक
7	सातवीं पंचवर्षीय योजना	1 अप्रैल 1985 से 31 मार्च 1990 तक
8	आठवी पंचवर्षीय योजना	1 अप्रैल 1992 से 31 मार्च 1997 तक
9	नवीं पंचवर्षीय योजना	1 अप्रैल 1997 से 31 मार्च 2002 तक
10	दसवी पंचवर्षीय योजना	1 अप्रैल 2002 से 31 मार्च 2007 तक
11	ग्यारहवी पंचवर्षीय योजना	1 अप्रैल 2007 से 31 मार्च 2012 तक
12	बारहवीं पंचवर्षीय योजना	1 अप्रैल 2012 से 31 मार्च 2017 तक

असमानता को समाप्त करके सामाजिक न्याय की स्थापना करना।

4. उपलब्ध मानवीय पूँजी का कुशलतम उपयोग करना तथा रोजगार के अवसरों का विस्तार करना।

5. सभी क्षेत्रों में आत्म निर्भरता की प्राप्ति, लेकिन मुख्यतः खाद्यान्न एवं औद्योगिक कच्चे माल के उत्पादन में आत्मनिर्भरता प्राप्त करना।

6. परम्परागत भारतीय अर्थव्यवस्था का आधुनिकीकरण करना।

7. शिक्षा तथा स्वास्थ्य सेवाओं का विस्तार करना और अधिकतम सामाजिक कल्याण की स्थिति को प्राप्त करना।

8. आर्थिक स्थिरता प्राप्त करना, क्योंकि आर्थिक स्थिरता के बिना आर्थिक विकास अर्थहीन हो जाता है ।

9. ग्रामीण विकास, सामाजिक एवं सामुदायिक सेवाओं का विस्तार, ऊर्जा उत्पादन में वृद्धि इत्यादि ।

10. क्षेत्रीय असमानताओं की समाप्ति।

14.4.2 भारत में पंचवर्षीय योजनाएं

नियोजित आर्थिक विकास की रणनीति के अन्तर्गत भारत में अब तक बारह पंचवर्षीय योजनाएं बनायी गयीं।

भारत–पाकिस्तान युद्ध, लगातार सूखे, मूल्य–वृद्धि तथा संसाधनों के क्षय से तीसरी योजना के पश्चात् योजना बनाने की प्रक्रिया में आई बाधा के कारण 1966 से 1969 ई. के बीच तीन वार्षिक योजनाएं बनाई गयीं। इस अवधि को योजना अवकाश कहा जाता है। तत्कालीन जनता सरकार ने पांचवीं पंचवर्षीय योजना को समय से पहले 1978 ई. में ही समाप्त करके, 1978 से 1983 के लिए अनवरत योजना प्रस्तुत की गई।

1980 में कांग्रेस सरकार ने अनवरत योजना को समाप्त करके 1 अप्रैल 1980 से 31 मार्च 1985 तक के लिए छठी पंचवर्षीय योजना घोषित की। 1978–79 के वित्त वर्ष को पांचवी योजना के साथ जोड़ दिया गया तथा 1979–80 की योजना को एकवर्षीय योजना की तरह देखा गया। इसी प्रकार तेजी से बदलती राजनैतिक स्थिति के कारण 1990 ई. में आठवीं पंचवर्षीय योजना आरम्भ नहीं की जा सकी।

बारहवीं पंचवर्षीय योजना का आधार अधिक तीव्र, समावेशी और धारणीय विकास रखा गया। इस योजना में 8 प्रतिशत विकास दर का संशोधित लक्ष्य रखा गया है और साथ ही गरीबी निवारण, बेरोजगारी में कमी, शिक्षा तथा स्वास्थ्य सेवाओं का विस्तार आदि निगरानी योग्य लक्ष्य भी रखे गये हैं।

अनवरत योजना– इसमें एक चालू योजना को निश्चित समय अन्तराल के बाद अद्यतन और सम्पादित किया जाता है। इसमें चालू योजना के लक्ष्यों, अनुमानों, संसाधन आवंटन और योजना की समयावधि को परिवर्तित करने की लोचशीलता होती है।

14.4.3 नीति आयोग (NITI AAYOG)

नीति आयोग या बदलते भारत के लिए राष्ट्रीय संस्थान ;की स्थापना केन्द्रीय मंत्रिमण्डल के एक संकल्प द्वारा 1 जनवरी 2015 को की गई। वर्तमान में नीति आयोग के अध्यक्ष माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी, उपाध्यक्ष श्री अरविन्द पनगडिया तथा मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री अमिताभ कान्त हैं। सभी राज्यों के मुख्यमंत्री तथा केन्द्रशासित राज्यों के उपराज्यपाल नीति आयोग के सदस्य हैं। नीति आयोग भारत सरकार के लिए रणनीतिक तथा दीर्घकालिक नीतियों और कार्यक्रमों के निर्माण के साथ–साथ तकनीकी सलाह भी प्रदान कर रहा है। यह भारत सरकार के लिए थिंक टैंक है। अपने सुधार एजेंडे के तहत भारत सरकार ने योजना आयोग को विस्थापित करके नीति आयोग की स्थापना की है। यह एक महत्त्वपूर्ण परिवर्तन है। सभी राज्य राष्ट्रहित में एक साथ कार्य करें, इसके लिए नीति आयोग एक सर्वश्रेष्ठ मंच है। यह सहकारी संघवाद को बढ़ावा देता है। नीति आयोग की स्थापना के मूल में दो केन्द्र हैं–टीम इंडिया हब तथा ज्ञान और नवाचार हब। टीम इंडिया हब राज्य सरकारों को केन्द्र सरकार के साथ शामिल करने का कार्य करता है। ज्ञान और नवाचार हब नीति आयोग की थिंक टैंक क्षमताओं को मजबूत बनाता है। नीति आयोग सहयोगपूर्ण संघवाद पर आधारित एक क्रांतिकारी सुधार है।

महत्वपूर्ण बिन्दु

1. एक देश के सभी साधनों द्वारा एक वर्ष में उत्पादन प्रक्रिया में योगदान के फलस्वरूप अर्जित आय का योग राष्ट्रीय आय कहलाता है।

2. एक देश की घरेलू सीमाओं में एक वर्ष में उत्पादित समस्त अन्तिम वस्तुओं और सेवाओं के मौद्रिक मूल्यों का योग सकल घरेलू उत्पाद कहलाता है।

3. एक देश की राष्ट्रीय आय में उस देश की जनसंख्या का भाग देने पर प्रति व्यक्ति आय प्राप्त होती है।

4. भारत में राष्ट्रीय आय की गणना का कार्य केन्द्रीय सांख्यिकी संगठन द्वारा किया जाता है।

5. अर्थव्यवस्था में वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादन की गतिविधियों को अर्थव्यवस्था के तीन क्षेत्रों (प्राथमिक क्षेत्र, द्वितीयक क्षेत्र तथा तृतीयक क्षेत्र) में वर्गीकृत किया गया है।

6. प्राथमिक क्षेत्र में कृषि, पशुपालन सम्बद्ध अन्य उत्पादन क्रियाओं को सम्मिलित किया जाता है।

7. द्वितीयक क्षेत्र की क्रियाओं में विनिर्माण तथा निर्माण क्रियाओं को सम्मिलित किया जाता है।

8. तृतीयक क्षेत्र को सेवा क्षेत्र भी कहा जाता है। यह क्षेत्र

सेवाओं के उत्पादन से सम्बन्धित है।

9. आर्थिक वृद्धि का तात्पर्य बढ़ती हुई राष्ट्रीय आय तथा प्रति व्यक्ति आय से है। यह एक मात्रात्मक अवधारणा है।

10. आर्थिक विकास का तात्पर्य बढ़ती हुई राष्ट्रीय आय तथा प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि के साथ–साथ अर्थव्यवस्था की संरचना, संस्थागत ढांचे, तकनीक एवं सामाजिक दृष्टिकोण आदि में अनुकूल परिवर्तन होने से है।

11. एक अर्थव्यवस्था द्वारा उपलब्ध आर्थिक संसाधनों को उपयोग में लेकर निर्धारण लक्ष्यों को प्राप्त करने का विज्ञान ही आर्थिक नियोजन है।

12. भारत में अब तक बारह पंचवर्षीय योजनाएं बनायी गयी हैं। योजनाएं बनाने का कार्य योजना आयोग द्वारा किया जाता था।

13. योजना आयोग को समाप्त करके 1 जनवरी 2015 को नीति आयोग की स्थापना की गई।

14. नीति आयोग सरकार के लिए विभिन्न नीतियों और कार्यक्रमों का निर्माण तथा सरकार को सलाह प्रदान करने का कार्य करता है।

अभ्यास प्रश्न

(अ) अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न–

1. राष्ट्रीय आय की परिभाषा लिखिए।
2. सकल घरेलू उत्पाद को परिभाषित कीजिए।
3. राष्ट्रीय आय की गणना हेतु राष्ट्रीय आय समिति का गठन कब किया गया ?
4. भारत में वर्तमान में राष्ट्रीय आय की गणना का कार्य कौन करता हैं ?
5. अर्थव्यवस्था को कितने क्षेत्रों में वर्गीकृत किया गया है? नाम लिखिए।
6. तृतीयक क्षेत्र में शामिल की जाने वाली तीन सेवाओं के नाम लिखिए।
7. आर्थिक विकास का अर्थ स्पष्ट कीजिए।
8. श्री एम0 विश्वेश्वरैया की पुस्तक का नाम लिखिए।
9. कौनसी पंचवर्षीय योजना को समय से एक वर्ष पूर्व ही समाप्त कर दिया गया था ?
10. नीति आयोग के अध्यक्ष कौन हैं ?

(ब) लघूत्तरात्मक प्रश्न–

1. राष्ट्रीय आय की गणना क्यों की जानी चाहिए ? कोई तीन कारण दीजिए।
2. भारत में राष्ट्रीय आय की गणना सर्वप्रथम किसने तथा कब की थी ?
3. स्वतंत्रता से पूर्व भारत में राष्ट्रीय आय की गणना करने वाले तीन विद्वानों के नाम बताइए।
4. प्रति व्यक्ति आय की अवधारणा को स्पष्ट कीजिए।
5. भारत में तृतीयक क्षेत्र के बढ़ते महत्त्व को समझाइये।
6. आर्थिक वृद्धि की अवधारणा को समझाइये।
7. आर्थिक विकास की अवधारणा, आर्थिक वृद्धि की अवधारणा से किस प्रकार अधिक व्यापक हैं ?
8. आर्थिक नियोजन की अवधारणा को समझाइये।
9. स्वतंत्रता पूर्व नियोजन हेतु कौन–कौनसे प्रस्ताव रखे गये ?
10. बारहवी योजना की अवधि क्या है ? इस योजना में कौनसे लक्ष्य रखे गये ?

(स) निबन्धात्मक प्रश्न

1. राष्ट्रीय आय किसे कहते हैं ? राष्ट्रीय आय तथा राष्ट्रीय उत्पाद के बीच सम्बन्ध स्पष्ट कीजिए।
2. अर्थव्यवस्था के विभिन्न क्षेत्रों को विस्तार से समझाइये।
3. आर्थिक विकास के साथ–साथ अर्थव्यवस्था के विभिन्न क्षेत्रों के महत्त्व में होने वाले परिवर्तन की विवेचना कीजिए।
4. भारत में आर्थिक नियोजन की तकनीक अपनाने के पीछे क्या उद्देश्य थे ?
5. नीति आयोग पर एक लेख लिखिए।